श्रीगणेशाय नमः। जटाकटाहसंभ्रमद्भ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि॥
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।।१।। धराधरेन्द्रन
न्दिनीविलासबन्धसिन्धुरे स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।। कृपाकटाक्षधोरणी विभो
निरुद्धदुर्द्धटे यदि क्वचिद्दिगम्बरे मनोदमोऽस्तुवस्तुनि ।।२।। जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणाम
णिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।। मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदम
द्भुतं बिभर्त्तु भूतभर्त्तरि।। ३।। ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गया निपीतपञ्चसायकन्नम
न्निलिम्पनायकम्।। सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरं महः कपालिसम्पदे सरिज्जटा
लमस्तु नः ।। ४ ।। सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणी विधुस्सराङ्घ्रिपीभु
कः।। भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।। ५।। क
रालभालपट्टिकाधगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।। धराधरेन्द्रनन्दि

नीकुचाग्रपत्रचित्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनित्रिलोचनेरतिर्मम ॥ ६ ॥ नवीनमेघमण्डलीनिरुद्ध
दुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबन्धुकन्धरः ॥ निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतुकृत्तिसिन्धु
रः कलानिधानबन्धुरः श्रियञ्जगद्धुरंधरः ॥ ७ ॥ प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा
विलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ॥ स्मरच्छिदम्पुरच्छिदञ्जगच्छिदन्धकच्छि
दन्तमखच्छिदम्भवच्छिदन्तमन्तकच्छिदम्भजे ॥ ८ ॥ अखर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरस
प्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ॥ स्मरान्तकम्पुरान्तकम्भवान्तकम्मखान्तकङ्गजान्तम
न्धकान्तकन्तमन्तकान्तकम्भजे ॥ ९ ॥ जयत्वदभ्रविभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्क
रालभालहव्यवाड्हः ॥ धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्र
चण्डताण्डवश्शिवः ॥ १० ॥ दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोस्सु
हृद्विपक्षपक्षयोः ॥ तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोस्समप्रवर्तिताकदासदाशिवम्भजाम्यहम् ॥ ११ ॥

श्रीः २

कदा निलिम्पनिर्झरी निकुञ्जकोटरे वसन्विमुक्तदुर्मतिस्सदा शि।वस्थमञ्जलिं वहन् ॥ विलोललो
ललोचना ललामभाललग्नक शिवेति मन्त्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १२ ॥ तनोतु नो मनोमु
दं विनोदिनी महर्निशाम्परश्रियःपरम्पदन्तदङ्गजत्विषाञ्चयः ॥ निलिम्पनाथभाकरीकदम्ब
मौलिमल्लिकानिगुम्फनिर्झरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ॥ १३ ॥ प्रचण्डवाडवानलप्रभाऽशुभप्र
चारिणो महाष्टसिद्धिकामिनीजनावतातजल्पनम् ॥ विमुक्तवामलोचना विवाहकालिकध्वनि शिवेति
मन्त्रभूषणं जगज्जयाय जायताम् ॥ १४ ॥ ❁ ॥ इति दशाननकृतं शिवताण्डवस्तवः ॥ ❁ ॥ ० ॥
शिवप्रसादमन्तरा रहस्यमेतदद्भुतं शिवस्य के विजानते दशाननप्रकाशितम् । यदत्र पद्यगह्वरे श्रुतिर्विगा
हते क्वचिन्नसंस्कृता हि व्याकृतिस्स तेस्तदपक्षम्यताम् ॥ [illegible] ॥ बिन्द्वङ्गगजभूसङ्ख्ये वत्सरे मार्गशीर्षके।
गङ्गोपकण्ठे श्रीकाशीमध्ये देवलिलिखियम् ॥ शिव ॥ राम ॥ शिव ॥ राम ॥ शिव ॥